इलेक्ट्रॉनिक कचरा और उसका निपटारा

आपके लैपटॉप्स, स्मार्टफोन्स, माइक्रोवेव ओवन, फ्रिज वगैरह जैसी चीज़ें जब बेकार हो जाती हैं तो आप उन्हें फेंक देते हैं या शायद किसी कबाड़ी को बेच देते हैं। क्या कभी यह सोचा है कि इन चीज़ों का आगे क्या होता है?

इलेक्ट्रॉनिक कचरे (ई-कचरे) का निपटान आजकल एक प्रमुख समस्या बन गया है। इस प्रक्रिया का एक नज़ारा चीन के दक्षिणी तट पर कुछ गांवों में देखा जा सकता है। गुइयू नामक इस क्षेत्र में कम से कम तीन हज़ार वर्कशॉप्स में हज़ारों महिलाएं ऐसे ही ई-कचरे को संभालने, छांटने और ठिकाने लगाने का काम करती हैं।

चीन में इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के उत्पादन में जो उछाल आया है, उसके चलते वर्ष 2012 में वहां 70 लाख टन ई-कचरा पैदा हुआ था। इसके अलावा यूएसए, ऑस्ट्रेलिया और युरोप से जहाज़ भर-भरकर ई-कचरा चीन पहुंचता है। वैसे तो चीन में ई-कचरे के आयात पर प्रतिबंध है मगर चोरी-छिपे यह माल वहां पहुंच ही जाता है।

ई-कचरा कई बहुमूल्य धातुओं का खज़ाना होता है जिनमें तांबा, सोना, चांदी और सीसा प्रमुख हैं। इनके अलावा वे तत्व भी इस कचरे में खूब होते हैं जिन्हें दुर्लभ मृदा कहते हैं। यिट्रियम, युरोपियम, डिसप्रोसियम जैसे नाम वाले ये तत्व उतने दुर्लभ तो नहीं हैं मगर इनके भंडार कुछ ही इलाकों में सिमटे हैं - खास तौर पर चीन में ये बहुतायत से पाए जाते हैं।

लेकिन इन बहुमूल्य तत्वों को कचरे में से अलग करने की प्रक्रिया पर्यावरण पर घातक असर डालती है। मसलन, इस ई-कचरे को जलाने पर जो प्लास्टिक वगैरह जलते हैं उनकी वजह से हवा प्रदूषित होती है। फिर इस कचरे को तेज़ाब में पकाया जाता है और यह तेज़ाब आसपास के नदी-नालों में बहा दिया जाता है। गिउयू के आसपास के पानी की मछलियों में पोलीक्लोरीनेटेड बाईफिनाइल (पीसीबी) जैसे विषैले पदार्थ पाए गए हैं। इस क्षेत्र के बच्चों के खून में सीसे की भारी मात्रा पाई गई है।

इन सब समस्याओं को देखते हुए राष्ट्र संघ ने एक कार्यक्रम शुरू किया है - सॉल्विंग ई-वेस्ट प्रॉबलम (स्टेप)। इसके अंतर्गत कोशिश है कि ई-कचरे का ढेर कम किया जाए। खास तौर से इलेक्ट्रॉनिक निर्माताओं से कहा जा रहा है कि वे अपने उत्पादों में हानिकारक रसायनों का उपयोग कम से कम करें। इसके अलावा उन्हें इस बात के लिए भी राज़ी किया जा रहा है कि वे बेकार हो जाने के बाद अपने उत्पाद के रीसायक्लिंग को भी संभालें। ***(स्रोत फीचर्स)***